हमे प्रार्थना क्यों करनी चाहिए

लेखकः होल्लि. एल. मूडी
www.DivineRevelations.info/HINDI

मैने परमेश्वर को एक विशाल श्वेत सिँघासन पर विराज्यमान देखा । जनसमूह की एक लम्बी लम्बी पंक्ति उसके सम्मुख एकत्र थी ।

मै यह देख कर बड़ा विस्मित हुआ की इन सभी व्यक्तियों का कोई मुख नहीं था । जहां पर मुख होना चाहिए वहां रिक्त स्थान था ।

जैसे ही कोई व्यक्ति प्रभु के सम्मुख आता, वो एक पुस्तक खोलते और उसमे से वह उस व्यक्ति के सम्पूर्ण कार्यों को पढ़ देते । सब कुछ अभिलिखित था; और प्रभु उस पुस्तक को आरम्भ से समापन तक पढ़ रहे थे । इस विशेष पंक्ति मे हर व्यक्ति का न्याय हो रहा था, और उसे नरक का प्राणदण्ड दिया जा रहा था । जब भी प्रभु हर एक व्यक्ति को यह बताता कि उसे प्राणदण्ड दिया गया है, वो व्यक्ति चीखने लगता, और रोता, और प्रभु से भीख मांगता की उसे एक और संयोग दे । प्रभु के अपने कपोलों से आँसु गिर रहे थे, परन्तु वो अपने शीश यह कहते हुए हिलाते, कि प्रत्येक व्यक्ति को पश्चाताप और प्रभु के लिये जीवन व्यतीत करने को अनेक अवसर दिये गये थे । यह सब दीर्घकाल तक चलता रहा ।

अंत मे, प्रभु ने मेरी ओर देखा, और प्रश्न किया, ***"तुम कुछ करते क्यों नहीं ?"*** मै चकरा गया । *"आप मुझसे क्या चाहते है, प्रभु ?"* मैने उत्तर दिया । ***"प्रर्थना करो"***, प्रभु बोले । इसीलिए मै प्रार्थना करने लगा, परन्तु उत्साह से नहीं । इस सब के थोड़े वक्त पश्चात् , प्रभु मेरी ओर मुड़े और कहा, ***" इन लोगों की ओर देखो । वास्तव मे इनकी ओर देखो ।"*** जब मैने ऐसा किया, तो उनके मुख ध्यान मे आ गये । वे ऐसे लोग दिखने लगे जिनको मै अस्पष्ट रूप से चिह्नता था । वे मेरे परिचित थे । मैने थोड़े और उत्साह से प्रार्थना की । कुछ वक्त पश्चात् , प्रभु मेरी ओर और कठोरता से

फिर मुड़े , और कहा, *"इन लोगों की ओर फिर देखो ।"* अब यह लोग दोस्त बन गये । *"तुम्हे और लगन से प्रार्थना करनी होगी ।"* परन्तु अभी भी, यह लम्बी पंक्ति प्रभु के सम्मुख आती, वो उनको उनकी व्यक्तिगत पुस्तक मे से उनकी जीवन गाथा पढ़ कर सुनाते, और उनहे प्राणदण्ड देते ।

एक बार फिर प्रभु मेरी ओर मुड़े, इस बार क्रोध में । वो अभी भी उन आत्माओं पर रो रहे थे जो प्राणदण्ड पा रही थीं । *"क्या तुम सचमुच यहां जो कुछ हो रहा है उसे समझ कर समाविष्ट कर पा रहे हो ?"* प्रभु ने प्रश्न किया । *"ध्यान दो !!"* तभी, उस लम्बी पंक्ति के पीछे एक गड्ढ़ा खुल गया । मैने उस गड्ढ़े की ओर निगाह डाली । उसमे से एक डरावना अन्धकार आ रहा था । मुझे उस गड्ढ़े मे से चीखना, और चिल्लाना, और विलाप, और कराहने का शब्द सुनाई दिया । *"जाओ और देखो, "* प्रभु ने आज्ञा दी । मेरी इच्छा नहीं थी । मै भयभीत था, परन्तु जैसे की कोई हाथ पीछे से मुझे इस काले गड्ढ़े की कगार तक धक्का दे रहा था ।

जब मै गड्ढ़े की कगार तक पहुंचा, मैने उसके अन्दर निगाह की । तब, मै आतंक और भय से पीछे हट गया । मै उस काले गड्ढ़े मे नीचे देखने पा रहा था । वो एक लम्बी, उतरती हुई सुरंग थी । मुझे उसके तल पर एक लोटता, बिलबिलाता, लोगों का समूह दिखाई पड़ा । वे इतने गठे हुए थे कि ऐसा व्यतीत होता था कि उनके मध्य कोई रिक्त स्थान नहीं है । वहां आंच थी, और उस काले गड्ढ़े के तल से नारंगी चमक आ रही थी । मुझे गंधक की महक आई । मुझे अग्नि और आंच दिखाई पड़ी । मुझे अग्नि की घोर तपिश का अनुभव हुआ । उस काले गड्ढ़े के तल पर मुझे लोगों की देह पर कीड़े रेंगते दिखाई दिये । वे लोग आग से जल रहे थे, परन्तु आग उनको भस्म नहीं कर रही थी । किन्तु , अग्नि के कारण वे पीड़ा और कष्ट से चिल्ला रहे थे । वे ऊपर काले गड्ढ़े के मूंह की ओर ताक रहे थे । उनके हाथ और भुजाएं ऊपर की ओर उठे हुए थे । वे विशाल तरंगों की तरह निरन्तर हिलते हुए और गतिशील थे । और वे चिल्ला रहे थे । छुटकारे के लिये चिल्ला रहे थे, और अनुग्रह के लिये । परन्तु कोई अनुग्रह न था । कोई छुटकारा न था ।

मैने अपने आप को उस काले गड्ढ़े की कगार से भय, त्रास और निराशा मे, वापस खींचा । मै प्रभु की ओर जहां वो सिँघासन पर विराजमान थे, पीछे की ओर मुड़ा । वो अभी भी पुस्तकों से पढ़ रहे थे । अब मैने उनके सिँघासन के निकट एक बड़ा, असीमित पुस्तकों का भण्डार देखा । और मुझे ज्ञात था की हर एक व्यक्ति जिसके विषय मे यह पुस्तकें लिखीं थी, प्राणदण्ड पाने वाले है । मैने लोगों की उस असीमित, लम्बी पंक्ति को देखा जो प्रभु के सम्मुख उपस्थित थी, और न्याय की प्रतीक्षा कर रहे थे । अब, हर एक मुख स्पष्ट रूप से दिखने लगा । वे तो मेरे मित्र, मेरे परिवार, मेरे कुटुम्बी थे । और उनको प्राणदण्ड प्राप्त हो रहा था । और मैने उनको उस काले गड्ढ़े मे डाले जाते देखा, और मैने उनका शब्द सुना जब वो चिल्लाते हुए उस लम्बी सुरंग मे गिर रहे थे ।

प्रभु मेरी ओर मुड़े, उनके कपोलों से तो अश्रुओं की धार बह रही थी, और कहा, *"अब प्रार्थना करो ।"* मै विलाप करते हुए परमेश्वर से चिल्लाने लगा कि वो इन लोगों पर दया करें । जैसे ही हर एक व्यक्ति को प्राण्दण्ड मिलता, मै काले गड्ढ़े की कगार तक भागता और उनको वहां से खींचने का प्रयास करता । मै उनके हाथ या भुजाएं पकड़ लेता, और उनको पकड़े रहने की चेष्टा करता । परन्तु वे मेरी पकड़ से छूट जाते । मैने हाथ बढ़ाकर प्रभु को पकड़ लिया, फिर दूसरी भुजा से उस काले गड्ढ़े मे हाथ बढ़ाया, जिससे चेष्टा करके मै उनको उस काले गड्ढ़े से बाहर निकाल सकूँ ।

"छोढ़ दो," प्रभु ने मुझसे कहा । *"अगर मै आपको छोड़ दूँ , मै इस गड्ढ़े मे स्व्यँ चला जाऊँगा, "* मैने विरोध मे कहा । *"छोढ़ दो,"* प्रभु ने फिर कहा । मैने छोड़ दिया । ऐसा लगा की अज्ञात हाथों ने मुझे पकड़ रखा है । मै उस काले गड्ढ़े की कगार पर लेट गया, उसके अन्दर मैने हाथ बढ़ाया, और उन गिरते हुए लोगों को पकड़ने और धरने का प्रयास किया । मुझे ऐसा अनुभव हुआ की मै उस अग्नि और लौ से स्व्यँ जल रहा हूँ । कभी तो, मुझे यह अनुभव हुआ की उस काले गड्ढ़े से "पँजे" निकलकर मुझे मार रहे हैं । मुझे अपनी भुजाओं पर जलने के दागों का अनुभव हुआ, और अपनी भुजाओं पर खरोंच के चिह्न दिखाई पड़े ।

मै रो रहा था, और परमेश्वर से आग्रह कर रहा था कि वो इनको, मेरे प्रियों को, छुटकारा दे । मै परमेश्वर से भीख मांग रहा था कि वो मेरे प्रियों पर अनुग्रह करे, और उनको काले गड्ढ़े मे डालने का प्राणदण्ड न दे । *"जब खोए हुए अपने हों तो उनके लिये प्रार्थना करना सुगम है,"*

प्रभु ने मुझसे कहा । *"स्मरण करो, जितने खोए हुए हैं वो सब मेरे प्रिय हैं । मै चाहता हूं कि मेरे*

पुत्र इनके लिये प्रार्थना करें, मेरे खोए हुए पुत्रों के लिए, जैसे तुम अभी प्रार्थना कर रहे हो । मै प्रार्थना मध्यस्थों की एक पीढ़ी उठाऊँगा जो मेरे खोए हुए पुत्रों के लिए अन्तर मे खड़े होंगे । यह मध्यस्थ युद्ध की ऊष्मा का अनुभव करेंगे, और उससे जल भी जाएंगे । नरक की शक्तियाँ इनके विरुद्ध आ जाएँगी, और इन पर आक्रमण भी करेंगी । फिर भी, मै उनके संग होऊँगा, और उनको धरे रहूंगा । अब क्या तुम प्रार्थना करोगे ?"

Translated to Hindi by Avinash Chandra Misra, webbie_colt@yahoo.co.in